५. मध्ययुगीन काव्य

(अ) भक्ति महिमा

– संत दादू दयाल

कवि परिचय : संत दादू दयाल का जन्म १५४४ को अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ। आपके गुरु का नाम बुड्ढन था। प्रारंभिक दिन अहमदाबाद में व्यतीत करने के पश्चात साँभर (राजस्थान) में आपने जिस संप्रदाय की स्थापना की, वह आगे चलकर 'दादू पंथ' के नाम से विख्यात हुआ। सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास संबंधी मिथ्याचार का विरोध साखी तथा पदों का मुख्य विषय है। आपने कबीर की भाँति अपने उपास्य को निर्गुण और निराकार माना है। हिंदी साहित्य के निर्गुण भक्ति संप्रदाय में कबीर के बाद आपका स्थान अन्यतम है। संत दादू दयाल की मृत्यु १६०३ में हुई।

प्रमुख कृतियाँ : 'अनभैवाणी', 'कायाबेलि' आदि।

काव्य प्रकार : 'साखी' साक्षी का अपभ्रंश है जो वस्तुत: दोहा छंद में ही लिखी जाती है। साखी का अर्थ है – साक्ष्य, प्रत्यक्ष ज्ञान। नीति, ज्ञानोपदेश और संसार का व्यावहारिक ज्ञान देने वाले छंद साखी नाम से प्रसिद्ध हुए। निर्गुण संत संप्रदाय का अधिकांश साहित्य साखी में ही लिखा गया है जिसमें गुरुभक्ति और ज्ञान उपदेशों का समावेश है। नाथ परंपरा में गुरु वचन ही साखी कहलाने लगे। सूफी कवियों द्‌वारा भी इस छंद का प्रयोग किया गया है।

काव्य परिचय : प्रस्तुत साखी में संत कवि ने गुरु महिमा का वर्णन किया है। ईश्वर को पूजने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर तो मन के भीतर ही है। नामस्मरण से पत्थर हृदय भी मक्खन-सा मुलायम बन जाता है। प्रेम का एक अक्षर पढ़ने वाले और समझने वाले ही ज्ञानी होते हैं। मनुष्य को उसका अहंकार ही मारता है, दूसरा कोई नहीं। अहंकार का त्याग करने से ईश्वर की प्राप्ति होती है। जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, वही इस भवसागर को पार कर सकता है। ईश्वर एक है, वह सभी मनुष्यों में समान रूप से बसता है। अत: सबको समान मानना चाहिए।

माखण मन पाहण भया, माया रस पीया ।
पाहण मन माखण भया, राम रस लीया ।।

जहाँ राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम ।
दादू महल बारीक है, द्‌वै कूँ नाहीं ठाम ।।

दादू गावै सुरति सौं, बाणी बाजै ताल ।
यहु मन नाचै प्रेम सौं, आगैं दीनदयाल ।।

जे पहुँचे ते कहि गये, तिनकी एकै बात ।
सबै साधौं का एकमत, बिच के बारह बाट ।।

दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ ।
बेद पुरान पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ ।।

कागद काले करि मुए, केते बेद पुरान ।
एकै आखर पीव का, दादू पढ़ै सुजान ।।

दादू मेरा बैरी मैं मुवा, मुझे न मारै कोइ ।
मैं ही मुझकौं मारता, मैं मरजीवा होइ ।।

जिनकी रख्या तूँ करै, ते उबरे करतार ।
जे तैं छाड़े हाथ थैं, ते डूबे संसार ।।

काहे कौं दुख दीजिये, साईं है सब माहिं ।
दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नाहिं ।।

दादू इस संसार मैं, ये दोइ रतन अमोल ।
इक साईं इक संतजन, इनका मोल न तोल ।।

('संत दादू दयाल ग्रंथावली' से)

शब्दार्थ :

पाहण = पत्थर
सुरति = याद, स्मरण
बाँचे = पढ़ना
मरजीवा = जीवित होते हुए भी मरा हुआ, वैरागी
करतार = सृष्टिकर्ता
रख्या = रक्षा करना

आकलन

१. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(अ) (१) अंतर स्पष्ट कीजिए –

माया रस	राम रस
....	....

(२) लिखिए –

'मैं ही मुझको मारता' से तात्पर्य ....

(आ) सहसंबंध जोड़कर अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए –

(१) पाती प्रेम की (२) साईं	(१) काहै को दुख दीजिए (२) बिरला

(१) ....

(२) ....

काव्य सौंदर्य

२. (अ) ''जिनकी रख्या तूँ करै ते उबरे करतार'', इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(आ) 'संत दादू के मतानुसार ईश्वर सबमें है', इस आशय को व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ ढूँढ़कर उनका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है', इस उक्ति पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(आ) 'प्रेम और स्नेह मनुष्य जीवन का आधार है', इस संदर्भ में अपना मत लिखिए।

रसास्वादन

४. ईश्वर भक्ति तथा प्रेम के आधार पर साखी के प्रथम छह पदों का रसास्वादन कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. **जानकारी दीजिए :**

(अ) **निर्गुण शाखा के संत कवि –**

....

....

(आ) **संत दादू के साहित्यिक जीवन का मुख्य लक्ष्य**

....

....

६. **निम्नलिखित वाक्य शुद्‌ध करके फिर से लिखिए –**

(१) बाबु साहब ईश्वर के लिए मुझ पे दया कीजिए ।

....

(२) उसे तो मछुवे पर दया करना चाहिए था ।

....

(३) उसे तुम्हारे शक्ती पर विश्वास हो गया ।

....

(४) वह निर्भीक व्यक्ती देश में सुधार करता घूमता था ।

....

(५) मल्लिका ने देखी तो आँखे फटी रह गया ।

....

(६) यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते मार्च पर भारा अप्रैल लग जायेगी ।

....

(७) हमारा तो सबसे प्रीती है ।

....

(८) तुम जूठे साबित होगा ।

....

(९) तूम ने दीपक जेब में क्यों रख लिया ?

....

(१०) इसकी काम आएगा ।

....

(आ) बाल लीला

– संत सूरदास

कवि परिचय : संत सूरदास का जन्म १४७८ को दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में हुआ। आरंभ में आप आगरा और मथुरा के बीच यमुना के किनारे गऊघाट पर रहे। वहीं आपकी भेंट गुरु वल्लभाचार्य से हुई। अष्टछाप कवियों की सगुण भक्ति काव्य धारा के आप एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी भक्ति में साख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव निहित हैं। कृष्ण की बाल लीलाओं तथा वात्सल्य भाव का सजीव चित्रण आपके पदों की विशेषता है। संत सूरदास की मृत्यु १५८० में हुई।

प्रमुख कृतियाँ : 'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्यलहरी' आदि।

काव्य प्रकार : 'पद' काव्य की एक गेय शैली है। हिंदी साहित्य में 'पद शैली' की दो निश्चित परंपराएँ मिलती हैं, एक संतों के 'सबद' की और दूसरी परंपरा कृष्णभक्तों की 'पद शैली' है, जिसका आधार लोकगीतों की शैली है। भक्ति भावना की अभिव्यक्ति के लिए पद शैली का प्रयोग किया जाता है।

काव्य परिचय : प्रस्तुत पदों में कवि ने कृष्ण के बाल हठ एवं यशोदा की ममतामयी छबि को प्रस्तुत किया है। प्रथम पद में अपने लाल की हर इच्छा पूरी करने को आतुर यशोदा चाँद पाने के कृष्ण हठ को चाँद की छबि दिखाकर बहला लेती है। चाँद को देखने पर कृष्ण की मोहक मुस्कान देख माँ यशोदा बलिहारी हो जाती है। द्‌वितीय पद में माँ यशोदा कृष्ण को कलेवा करने के लिए दुलार रही है। उनकी पसंद के विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन सामने रख वह मनुहार कर रही है।

(१)

बार बार जसुमति सुत बोधति, आउ चंद तोहिं लाल बुलावै ।
मधु मेवा पकवान मिठाई, आपुन खैहै, तोहिं खवावै ।।

हाथहिं पर तोहिं लीन्हे खेलै, नैंकु नहीं धरनी बैठावै ।
जल-बासन कर लै जु उठावति, याही मैं तू तन धरि आवै ।।

जलपुट आनि धरनि पर राख्यौ, गहि आन्यौ वह चंद दिखावै ।
सूरदास प्रभु हँसि मुसक्याने, बार बार दोऊ कर नावैं ।।

(२)

उठिऐ स्याम कलेऊ कीजै । मनमोहन मुख निरखत जी जै ।।
खारिक दाख खोपरा खीरा । केरा आम ऊख रस सीरा ।।

श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी । सफरी चिउरा अरुन खुबानी ।।
घेवर फेनी और सुहारी । खोवा सहित खाहु बलिहारी ।।

रचि पिराक लड्डू दधि आनौं । तुमकौं भावत पुरी सँधानौं ।।
तब तमोल रचि तुमहिं खवावौं । सूरदास पनवारौ पावौं ।।

('सूरसागर' से)

शब्दार्थ :

बोधति = समझाती है
खैहे = खाएगा
तोहिं = तुम्हें
बासन = पात्र, बर्तन
गहि = पकड़
नावैं = डालते हैं
कलेऊ = जलपान, कलेवा
सँधानौं = अचार

जी जै = जी रही हूँ
खारिक = छुहारा
दाख = किशमिश
सफरी = अमरूद
खुबानी = जरदालू
सुहारी = पूड़ी
पिराक = गुझिया जैसा एक पकवान
पनवारौ = पान खिलाई

स्वाध्याय

आकलन

१. **लिखिए :**

(अ) यशोदा अपने पुत्र को शांत करती हुई कहती हैं –

....

....

(आ) निम्नलिखित शब्दों से संबंधित पद में समाहित एक-एक पंक्ति लिखिए –

(१) फल : ....

(२) व्यंजन : ....

(३) पान : ....

काव्य सौंदर्य

२. (अ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –

''जलपुट आनि धरनि पर राख्यौ।
गहि आन्यौ वह चंद दिखावै।।''

(आ) निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए –

''रचि पिराक, लड्डू, दधि आनौं।
तुमकौं भावत पुरी सँधानौं।।''

अभिव्यक्ति

३. 'माँ ममता का सागर होती है', इस उक्ति में निहित विचार अपने शब्दों में लिखिए।

रसास्वादन

४. **बाल हठ और वात्सल्य के आधार पर सूर के पदों का रसास्वादन कीजिए।**

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. **जानकारी दीजिए :**

(अ) **संत सूरदास के प्रमुख ग्रंथ –**

....

(आ) **संत सूरदास की रचनाओं के प्रमुख विषय –**

....

....

रस

हास्य – जब काव्य में किसी की विचित्र वेशभूषा, अटपटी आकृति, क्रियाकलाप, रूप-रंग, वाणी एवं व्यवहार को देखकर, सुनकर, पढ़कर हृदय में हास का भाव उत्पन्न होता है, वहाँ हास्य रस की निर्मिति होती है ।

उदा. – (१) तंबुरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप,
साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप ।
घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,
धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता ।।

– काका हाथरसी

(२) मैं ऐसा शूर वीर हूँ, पापड़ तोड़ सकता हूँ ।
अगर गुस्सा आ जाए तो कागज मरोड़ सकता हूँ ।।

– अजमेरी लाल महावीर

वात्सल्य – जब काव्य में अपनों से छोटों के प्रति स्नेह या ममत्व भाव अभिव्यक्त होता है, वहाँ वात्सल्य रस की निर्मिति होती है ।

उदा. – (१) जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।
हलरावे दुलराइ मल्हावै, जोइ सोइ कछु गावै ।।

– सूरदास

(२) ठुमक चलत रामचंद्र, बाजत पैंजनियाँ ।
किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय ।
धाय मात गोद लेत, दशरथ की रनियाँ ।।

– तुलसीदास